

5. प्रश्न - विकास स्तर के आधार पर संसाधन किन्ने प्रकार के होते हैं? (3)

उत्तर - विकास स्तर के आधार पर संसाधन निम्नलिखित चार प्रकार के होते हैं।

i. संभाव्य संसाधन - ऐसे संसाधन जिन्हें उपयोग में लाये जाने की संभावना रहती है, किन्तु तकनीक की कमी, दुर्गम क्षेत्र तथा अन्य कारणों से उनका उपयोग नहीं होता है, संभाव्य संसाधन कहलाते हैं।

आहरणस्वरूप सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, सागरीय ऊर्जा इत्यादि के लिए भारत में अपार संभावनाएँ हैं, परन्तु उसका उपयोग सही रूप से विकास नहीं हो पाया है।

ii. विकसित या ज्ञात संसाधन - जिन संसाधनों की तकनीक विकसित हो चुकी है और जिन्हें खोजकर उनका उपयोग किया जाता है, उसे विकसित या ज्ञात संसाधन कहते हैं। इमारखंड, असम, गुजरात और मुम्बई हाई से निकाले जाने वाले खनिज तथा असम, गुजरात और मुम्बई हाई से निकाले जाने वाले खनिज तेल विकसित या ज्ञात संसाधन हैं।

iii. भंडारित संसाधन - जो संसाधन किसी विशेष क्षेत्र में मौजूद तथा मानव की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सक्षम हो, परन्तु उपयुक्त प्रौद्योगिकी के अभाव में उसका उपयोग नहीं हो रहा हो, उन्हें भंडारित संसाधन कहते हैं। जल में छिपी हुई अपार ऊर्जा उत्पन्न करने की क्षमता और अधिक गहराई में पाये जाने वाले खनिज भंडारित संसाधन हैं, जिनका उपयोग उपयुक्त तकनीक और अर्थ के अभाव में नहीं हो पा रहा है।

iv. संचित संसाधन - संचित संसाधन ऐसे संसाधन हैं, जो वर्तमान तकनीकी आर्थिक और सामाजिक दशाओं में अनुपलब्ध होते हुए भी भविष्य में तकनीकी परिवर्तन के साथ प्राप्त हो जायेंगी की संभावना हो। संयुक्त राज्य अमेरिका में पेट्रोलियम का प्रचुर भंडार है, जिसे भविष्य के लिए सुरक्षित रखता है और खासी मा अन्य देशों के पेट्रोलियम का उपयोग करता है।

6. प्रश्न - किसी भी राष्ट्र के आर्थिक विकास में संसाधनों के योगदान की व्याख्या करें।

उत्तर - संसाधन किसी भी राष्ट्र के आर्थिक-सामाजिक विकास रूपी मंजिल का स्रम्भ होता है। जिस राष्ट्र में संसाधन की कमी होती है, वह अंतर्राष्ट्रीय विकास रूपी स्पर्धा में पिछड़ जाता है। इसका मतलब यह नहीं है, कि प्राकृतिक संसाधन से सम्पन्न राष्ट्र ही विकास करते हैं। जापान एक ऐसा राष्ट्र है, जहाँ प्राकृतिक संसाधनों की भारी कमी है। किन्तु उसका मानव संसाधन तकनीकी दृष्टि से इतना मजबूत है कि यह राष्ट्र उपलब्ध सभी पदार्थों का विवेकपूर्ण उपयोग कर विकसित राष्ट्रों की कतार में खड़ा है। किसी भी राष्ट्र के विकास में भौतिक एवं जैविक संसाधन के साथ-साथ मानव-संसाधन की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अतः कहा जा सकता है कि मानव विविध संसाधनों के क्षीय नियंत्रक की स्थिति में रहता है।



3 प्रश्न- सतत विकास की अवधारणा की व्याख्या करें।

उत्तर- मानव जीवन की गुणवत्ता को बनाये रखने के लिए संसाधनों का सतत विकास की आवश्यकता है। "संसाधन एक प्रकृति पदत उपहार है" जिसे समाज के समूह लोगों के द्वारा निजी स्वार्थ से वशीभूत होकर संसाधनों का विवेकहीन दोहन किया गया है। यदि इन स्वार्थी तत्वों के द्वारा संसाधनों का अनपरत दोहन चलता रहा तो भूमंडलीय- तापन, ओजोन क्षय, पर्यावरण- प्रदूषण, सूखा- सरण भू-स्खलन, अभ्लीभ वर्षा, अस्वाभाविक मृतु- परिवर्तन जैसे पर्यावरणीय संकट पृथ्वी पर व्याप्त सभ्यता- संस्कृति को समाप्त करने को तैयार है।

अतः ~~क~~ भविष्य में आने वाली पीढ़ियों की आवश्यकता की पूर्ति को प्रभावित किए बिना वर्तमान संसाधनों का न्यायसंगत बंटवारा और वर्तमान विकास को कायम रखना ही सतत विकास कहलाता है।

सतत विकास के निम्न लिखित उपाय हैं-

- (i) जल प्रबंधन- पहली और सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता जल प्रबंधन नीति को कठोरता से लागू करना है।
- (ii) बहते जल की बर्बादी को रोकना- इसके लिए नहरों को पक्का करना, भूमि का विकास और समतल करना एवं कमान क्षेत्र में जल के समान वितरण वारकों का निर्माण करना चाहिए।
- (iii) फसल प्रारूप- कम वर्षा वाले क्षेत्रों में अधिक जल पैदा होने वाली फसलों को नहीं बोना चाहिए इसके स्थान पर खड़े फल, चना, ज्वारा, मूंग इत्यादि का उत्पादन करना चाहिए।
- (iv) परितंत्र विकास- विशेष रूप से अंगूर क्षेत्र में परितंत्र विकास के लिए वन रोपण, वृक्ष रक्षण मेरवला और चारागाह का विकास करना चाहिए।